خیراشاہ
खैरा शा
مطبع حسینے اگرہ مین سید حسین علی کے اہتمام سے چہپا

आषाढ कहै सुनरी सखी उठी न देख बहार
मेरा देश विदेश विछुरन तेरे भाग ॥ ॥

आषाढ समझावे सखी तू मोहि दोषन लावरी
वे तुम्हें चाहैं थे तुम माती फिरा थी बावरी ॥ ॥
अब देख कै काली घटा बैठी लिये शिर खोल कै
तू रही मगरूर में चाहा न मीठा बोल कै ॥ ॥
सुनरी नादान तैंने मान करि कै क्या लिया ॥ ॥
हाथ से जस खोय कैं सामान जो अपजस का लिया
अब समझ आई तुझै जब से रही वे आदरी
नैना लगे अब लोचने देखी गगन पर बादरी

सावन आवन कह गये उमग चले बहु नीर
जो अब के पिय दरस दें सीतल होय शरीर

सावन अजब ये मास मासमैं सम तीन ऋतु पियका भली
सेज पर गल लाग सोती गूंथती चंपा कली ॥ ॥
हिय प्रेम डोरी बांध प्रीतम मिल सहेली झूलती
मैं अकेली तड़फती नेह्यान सावन भूलती ॥ ॥
चोला जो पहरा रैनि आधी बूंद बरसै अति झरी ॥

जोगी जुगाते आने की नाहीं आह किस्मत क्या करी
आढ़े कुसूमी चूनरी जो है सुहागन पीव की
सावन कठिन दुख दे चला गत कौन मेरे जीव की
सावन कहै सुन री सखी उठोन मो सम देख
उन से चारा ना चले जिन लिखी कर्म में रेख
सावन कहै सुन बावरी कर वाट बैठी और खड़ी
शायद कभी फिर भी कहै तुम पर करम की वे घड़ी
जल धार बरषे मेघ जल और कोकिल कुहकाते हैं
जिन पर पिया का प्यार है वे तीज खेलन जाते हैं
जिस वक्त था वह जी हिंडाले पी रंगीले बाग में
उस वक्त तू क्यों ना आगई भर रंग अपनी मांग में
आढे कसूभी चूनरी पहरे जो साथन सब हँसे
जिन पर पिया का प्यार है वे रात दिन मन में बसे
भादों निस अंधियार है मुख सूझे नहीं हाथ
एक पियारे पी बिना सब जग उजरत जात
भादों में जादों गर नहो तन को तन की तपत कैसें बुझे
जिस देश मेरा पी गया उस देश ले जावो मुझे ॥ ८ ॥ ४ ॥

एक रेन कारी विरह भारी सेज पग कैसे धरों
इन को किलों ने घेर बांधा यह विपत कब लग भरू
त्यौहार आया नाग पंचै सब सुहागन झूलता॥
मेरे कर्म में फांसे ढल गये मैं फिरूं पंडित बूझतो
एक तपत भारी ये विहारी देह मेरी दाहेने॥
बीती जो रुत भादों चलो बिन मीत सुख कों पाइये
भादों कहे सुनरी सखी उठीन देख बहार
तैने बाजी जीत के दई हाथ सो हार
भादों कहे मेरी रैन अंधेरी सब मुझे आसान है
जी को पिया प्यारे के ऊपर जानसे कुरबान है॥
बोले थी कोयल कामनी कूक को चितोवे थी खड़ी
जिसपर गगन गरजे पिया सुन चेत चिंता ना करे
मोरे गुंजारें और पुकारें सुनके तू जो सो रही॥
जोवन भवन में जग मगाते दिया मो साम खो रही
तपत पड़ती तू भी जलती है पिया बिन एक कसो
समझ के मन मार बैठी कर तूति अपनी देख ले
आई ऋतु आसोज की मेरे मन की मौज

सीतनगारा दे चला चढ़ी विरह की फौज
आसोज में घर आव वालम करम कर गल लावती
घर घर सुहागिन जोय वोवे पिया नारते गावती
पूजे दशहरा पाय तो पिया नो रते चरते फिरैं॥
में दुखारी हूं निराली कर्म आगें क्या करें॥॥
गरजे गगन लरजे हिया और कूंच बरखा ने किया
उड़ती फिरूं विपता भरूं दुख कर्म मेरे लिख दिया
एक स्वात बरषै नैन तरषे बूंद सुख चात्रग परी
आसोज बीता पीन आये हाय किस मत क्या करी
आसोज कहै हम भी चले सारी ऋतु बरषाय
कातक की बिनती करो जो कछु फल पाय॥
कहने लगा आसोज तू तो मस्त अपनी मोज़ में॥
जैसे पिया ही सूरमा अड़ दैंके लडें हैं फौज़ में॥
पिय को रुसा के क्या मज़ा देखा जो सुनवे बावरी
उस पी विना तुम को ना मिला सन मान आदर भावरी
सब सखी पूजन को चली एक पांयता त्यों हार री॥
उस पिया विना मन जाय प्यारी धूम घर औरबाहरी

दूर आयो तीत सुन अब और ऋतु बर्षा गई ॥
चात्रग सभी मुख मूंद बैठे अब खबर तुम को भई ॥
कातिक मेरे महरमी पिया मिला अो आन
बिना कर्म कहां पाइये ऐसे कंथ सुजान ॥ ५ ॥
आया जो कातक मास रुत पलट पिया सरदी भई
हमरी सुनी ना बात बिघना आह किस्मत का भई
एक सौरती की रैन का सुख राज मेरा ले गये ॥ ५ ॥
मोह ज्ञान अती अभागन एक नाम सुमरन दे गये
गल मोतियों का हार पहने रेख काजल की दिये
जिन को सुफल सुख चांदनी मन हाथ में पिये वालिये
गंगा सुफल होने चली कर हाथ ले गंगा जली ॥
रुत बीत कातिक भी चला अब सरद ऋतु पिय काभ ली
कातिक कंथ रुसाय कै उन को कहां बिसराम
अब तेरे तन को लगी जब आन सताई काम
कातक कहै जब तून समझी अब तेरे तन को पड़ी
अब तो कहेंगी वे कहां उन को न छाडे एक घड़ी
क्यों ना तें पूजी सौरती बाले न दिवले घीव के

उस वक्त कौंना कर लिंपे जो चाव थें तेरे जीवके

चांदनी की मौज में तें चरन पिय के नागहे ॥

तू रही मन सरम के उन के बचन वाला भये ॥

एक सजन तरुणी वरन वरणी वस्त्र भूषण भाजके

जिन पे पिया का प्यार है वे न्हाय गंगा जाय कें

मग शिर में मन ले गये पिया पिया से जो साथ

अति जाड़ा पड़ने लगा कंपन लागे गात

आया जो मगशिर मास बालम सीत अति दुख दे

सीतल पवन झोले भवन विन पिया कारज कव पड़े

एक जान सीतल मान नैना और तुमर लग रहे

पाला कठिन पड़ने लगा और वान विरह के लगर हि

मौसम जो सरदाई अजब दौलत ले जाके बांटिये

बरफ बरफे जीव तरषे रोय निस दिन काटिये

सरद हकिमा सरद सजनी सरद मोती हार के

ऋतु वीन मगशिर भी चला दिन कहां गमाये प्यार कि

मगशिर कैहे हम भी चले सुन सखी वे होस

कोप भरैगी आपना मोहि लगावै दोष

मगशिर कहें मैं ऐसा समझाऊं थाजो वनभरी
जब तुझे कुछ चाह थी तें जब फिक्र कौना करी
पंथ पछी उड़ चले और लेत हैं वन वास रा॥
दूर कर तु तुझे कोई नंही हैगा किस का आसार
मह खूब सेती प्यार करती अजब सुखसे भवनमें
बाला बिहाला काट देती पिया संगतू मगन में
अब क्या करैगी हे परी जो भीर तुझ पे आइ कै॥
उन को नंही विसराम जिन बालम रुसाये जान कै
पूष रोस मतना करे अति वर्षैगा शीत॥
उन का कैसे जीवना जिन के विसरे मीत
पूष में पिया घर नंही कहो कामिनी तब क्या करै
कर्म रेख बिचार अपनी जो लिखा सोई भरे॥
मुस किल कठिन है इश्क में यह जो परी है आयके
पिया को जुदाई कामिनी चकवी की पूछे जाय के
परत पाला अति निराला धर्म कारज कीजिये
कामिनी को काम व्यापा आय दरसन दीजिये
नाराज होगये जो सजन फिर याद तुम विन को नले

पूष बीता आव बालम दिल की ग्रह तू खोल ले

पूष कहे पिया पीर से रोवन बोले बैन ॥

जो चाहें सुख सेन को क्यों जो रहें ये नैन

कहने लगा जब पूष उन बिन कुछ नहीं तुझे चैनरी

पिय पावती गल लावती सुख से गुजरती रैनरी

तू न जाने थी कि जाड़े कठिन यह जन जाल हैं

जो बन सदा थिर ना रहे है दिन चार का यह ख्याल है

किया नमा था सीतने अब तेरी जो इस देह मां

उन पर असर नहीं सीत का जो हैं पिया के नेह मां ॥

तू ज्ञान बर बाह करती उमर देती सबर मां ॥

बाली उमर सुन ले खबर काटेगी किस तू तो रमां

माघ मास सब भूजती घर घर चार बसंत ॥

हग विरहन तलफत फिरै कब घर आवै कंत

माघ में पिया घर नहीं आसा लगी जो कंथ की

ठाडी अटारन हो रही जो राह देखूं कंथ की ॥

अंब केले कमल मोले सफल बन डाली खिली

सब बसंती साज साजें जाय एक से एक मिली ॥

सकट है घर बार में सखि पिया विन कैसे करों ॥
कर्म कर घर आव बालम सीस चरणों धरों ॥
आज रुत है वसंत घर घर राग गावें हैं गुनी ॥
माघ में था चित मिलन को ख़बर में भी ना सुनी॥

माघ कहै सुनरी सखी प्यारी तेरी चूक
बरषत है माघौट का देख उठी तन कूक

माघ कहै जब नीर बहे ये साथ होता कंथ का ॥
पहरो वसंती लोचना तू आज है दिन निहंचिंत का
मौलने तर वर जो अंबा सेती रुक रुक जोर का ॥
दुख दे रहा था तुझे तेरा कर्म वैरी और का ॥
पंचमी की रात को तू मित्र को गल लावती ॥
काहे को फिरती दरवदर घर बैठ मंगल गावती
सारीनो पहरी सुरत कर के सेज पिय के कारने ॥
उन को सदा रस रंग जो सजन बैठे सारने ॥

फागुन में सब खेलती अवीर गुलाल उडाय
हम विरहन तल फत फिरें कब देखेंगे आय ॥

यों खलने को चाव आया बाल संगी राव से ॥

उष्न हिलोरे आय आली पाऊँन कोई दाव से
उडती गुलालें पड़ती कुहारें घर घरमेंरंग झाइयाँ
मैं जो अकेली मझधार बैठी घर आओ मेरे साँइयाँ
निपरस्पन लल चाय होरी सुनिजो खेलें नारियां
चली बनत बनाय मानो के सरि की सी क्यारियाँ॥
चंपे का सा रंग तेरा कठिन हैगा खेलना ॥ ॥
बीती जो रुत फागुन चला सुख को भी दुख में ठेलता
फागुन रंगवनावती भांत भांत के सम चार॥
हम विरहन लल फत फिरें देखन को संसार
फागुन कहे आई थी होरी रंग किया था मान का॥
मान को है भजानन होगया इस रंग का॥५॥
कौं नाम चाया रंग तूने सरस रूप बनाय के॥
सुरत कर पिच कारियन कर गही कौंना धाय के
कौंना अबीर उड़ाय प्यारी साथ खेली प्यार सें
कर्म की मारी फिरें जैसे कुंज टूटी डाल सें॥॥
तें क्या मजा जाना सखी केसर चुना पिचकार कें
घर घर भवन सज गावती उस राज हर दिल दारका

चैत चतुर मति छांडियों नित देखे चित लाय।
जिन के साजन घर नहीं कैसे रैन विहाय
चैत में पिय घर नहीं चित सों विसारे बासरे॥
जो कुछ किये औगुन सु जाने नीवते दुख में मरे
तेरी जुदाई से सजन में हुई जोगन जग फिरी
में सेज सूनी देख कै बेहाल होके भुइ परी॥
कैमल पर जो भँवर बोले जीव आस भुलायके
जो सजन आके मिले तो दिल की तपन बुझायहे
जब व्याकुल नैन लोचैं निकट थोरे दरश को
चैत बीता आव घर मुख फेर मेरी तरफ़ को

नैन कहे सुनरी सखी मन तन रोय गंमाय
कभी तुझे मिलि जायगा पिया मिलन का दाव

चैत कहता भाग तेरा खुश हुआ इस बख़त में
तब अंग सुगंध लगाय वैठी हुस्न के बी तख़त में
जब से हुई गरमी है तन मन सब उदा अकुलायरी
सुख में तुझे दुख होगया खोटे करम की बात री
सूमी जुगल जिय को विकल विरह पिय के से भई

अलख्या करेगी तू कठिन जो काम अगन पर गरभ
चंपा चंबेली केवड़ा सब हार गूंदन ले रही ॥
जिन पर पिया का प्यार है सिंगार सागर कर रही
पीतम ऋतु बैशाख की सब जुर आमो साज
तुम बिन मेरे बालमा मिटो जात है राज ॥
बैशाख में गरमी पड़े धूप बरषे अति धाय के ॥
करम कर घर आव बालम दरस दे मुझ को आय के
घर बार सब तपने लगा और बस्त्र तपें आराम के
जीव व्याकुल नैन लोचे देखने को श्याम के ॥
लोचन चलत जो देख के लहरैं पकड़ जोबन उड़े
हाथ तें मन खो गया भूपात नरवर के ग्रह पड़े ॥
इस इश्क को जाने न थी अन भूल होके में फंसी
बैशाख बीता पिय न आये संग की सखियां हसी
हेपि तुम बिन क्यों रहें ज्यों भौरा बिन बास ॥
दरस न आसा लग रही जब लग घट में सास
कहने लगा बैशाख जिस से दिन रहे आराम के
गुरबत गरीबी बीच चलना चरन गहती श्याम के

छिड काव करती प्यार सें। हर वार रहती पासजैं।
गरमी न करती असर तुझ पर फ़जल पिय का साथजैं।
पंछी अलख सो वन लगे और मीन डुबके नालसे
पाताल कूं चलने लगे बेली जो तर वर डाल के॥
पर वन पहाड़ जा रहे जो प्यासे हैं तेरे दरश के॥
निज रंग नू वन बाव प्यारी दिन आये अगले दरसके
जेठ जटा सिर राखके अंग भभूत लगाय॥
जो दरशन नहि देहि तो मेरी सुनोगे आप
जेठ में कामिन फिरै चढके अटारी कूकती ः
वन माल पहने गले में कर हार बैठी कूकती ः
चंदन अगर घिस बदन मलती मिला कर केसर ली
लाजिम था तुमको आवना दिलदार दरशन दे अली
कोयल पुकारे बाज मारै फिरै वन में भाजती ः
कौन रुत पिया गमन कीना बर सात आवे गाजती
बीना जो महीना जेठ का जो विपति थी मैं भरी ः
अब आव प्रीतम घर मेरे नाहिं जानियो खोटी घरी
कहै जो रैवेरा शाह अब मैंने सुनाये बारा मास ः

दरसन की आसा लग रही जब लग रहै तनमें उला स
वे शाष कहे तुझे होयगा दरसन अगले मास
बैठ रहो सुख चैन से जिय मत हारो आस
जैसा तुम को यह जेठ का आया औरन कूं हूजियो
जिन को तलब दीदार की उन की भी आसा पूजिये
देखन पिया के चरन को कारण भये सब जीव के
नैन बरषन रह गये वाले जो दिखले पीव के
दुखदरद मेरा मिटगया मिलाया जो उस दिल्दार को
दौलत मुझे ऐसी हुई भरगये घर घर बार को
ख़ैरा कहे सब शायरों में कदम दम की खाक़ हूं
गुनतो मेरे में है नहीं औगुन सबों से लाख हूं
जो सभ्भे दिल पाक कर एकजान होजाय
औगुन मुझमें ना रहे कंठ से लिपटाय २
खैरा खैर मनायले घड़ी घड़ी हरबार
नाजानों क्या होयगा सांई के दर बार
इति खैरा शाह का बारा मासा समाप्त

संवत् १९२२

बिरह दिवाकर ॥

अर्थात्

श्रीमहर्षि वाल्मीक, नाटक, तथा

अन्यान्य रामचरित्रकी

अनुसार

कविकुल

श्री महंत जानकी प्रसाद उपनाम रसिक बिहारीकृत

निर्मित

ग्रंथकार से अधिकार लेकर श्रीरामकथामृतपान

करने वाले रसिक सज्जनोंके

अवलोकनार्थ

जगन्नाथ प्रसाद वर्म्मानें प्रकाशकिया

बनारस

तिमिर नाशक यंत्रालय में

पण्डित कृपारामजीने

मुद्रितकिया

सम्वत् १९४६ मूल्य ≈)

विज्ञापन

सर्व साधारण को विदित हो कि जिन ग्रंथोंकी नामावली इसपुस्तक के अंतमें दी हुई है उन सबोंका अधिकार मैंने अपने हाथमें रक्खा है और प्राय: इनपर रजिष्ट्रीभी हो चुकीहै इसलिये इन ग्रंथोको विना मेरी आज्ञा छापने का अधिकार किसीको नहीं है ॥

जगन्नाथ प्रसाद खन्ना
ब्रह्मनाल बनारस
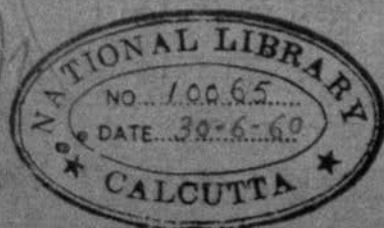
श्री जयति ।

अथ विरह दिवाकर प्रारंभ

श्रीगणेशायनमः ।

वन्देहं जानकी कांतं नव राजीव लोचनम् । हृदयानन्द दातारं धीरं वीरं धनुर्द्धरम् ॥ १ ॥ ध्यायेद्रामप्रियां सीतां सर्व क्लेशापहारिणीम् । भक्तदीना नुकम्पाढ्यां नतोहं जनकात्मजाम् ॥ २ ॥ प्रबुद्धं वीर वज्रांगं दुष्टदर्पापहं वरं । अञ्जना गर्भ संभुतं रामदूतं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥ घनाक्षरी कवित्त ॥ जनम उछाह रघुनन्दन को अनन्द दानि कहिये कहांलौं वाल लीला सो अपार है ॥ व्याह सुख अतुल समाज साज राज हूको रसिकविहारी सब मंगलको सार है ॥ वरनौं कछूक वन गौनको विरह जैसो नेह मग वासिन की कहत न पारहै । भाषिहौं वहोरि सिय रामकी वियोग कथा वालमीकि नाटका दि ग्रंथ अनुसारहैं ॥ ४ ॥ पाय पितु आयसु व नाय वेष तापस की वन्धु, सिय संग राम वनहिं सिधारेहैं । ताछिन भो विरह विलाप की क लाप महा जेते जड़ चेतन ते जातना निहारे हैं । भये हैं विहाल सियराम के वियोग सबै सरसिज वृन्द सूखे मानौ हिमि मारेहैं ॥ रसिक विहारी नृप कौसिल्या सुमित्रा आदि बोलहिं विकल हाय प्यारे हाय प्यारे हैं ॥ ५ ॥दो॥ हा

मातु सुमित्रा कौसिला सहित सकल रनिवास। विरह विकल विलपत विपुल समुझि राम बन बास ॥ ६ ॥ गद्गद गर जल नैन भरि कहति सुमित्रा बैन। अति कठोर मेरो हियो असहु दुक्ख फटै न ॥ ७ ॥ चित्र लिषे कपि देषिकै जो सिय भवन डराति ॥ पुत्रवधू प्यारी सु क्यौं वन वसिहै दिन राति ॥ ८ ॥ पलंग गोद तजि पालनां डगहू चलत न जात। ते मेरे वारे सु क्यौं सहिहैं आतप वात ॥ ९ ॥ कहति सुमित्रा नैंन भरि विकल वचन ह्वै दीन ॥ हाय कुटिल मति कैकयी अवध अनाथ जु कीन ॥ १० ॥ रे विधि लेत न प्रान क्यौं कहा कहौं अब तोहि ॥ राम लषन वन जात लखि जियत रही धिग मोहि ॥ ११ ॥ अवध निवासी नारि नर निसि दिन करत विलाप ॥ राम लषन सियकी विरह सबकी उर सन्ताप ॥ १२ ॥ कहत परसपर बैंन सब विरह विवस ह्वै दीन ॥ हांय लषन सिय राम हम काहि संग न लीन ॥ १३ ॥ खग मृग गो गज वाजि सब विलपत राम विहीन।१४। जे जड़ चेतन ते भये विरह विवस बहु छीन ॥ कनक पींजरन में कहैं सुक सारिका विहाल। करै राम सिय लषन विन को हमरो प्रतिपाल १५ भषहिं तिण चरहिं न पियहिं जल हेरिहेरि हिहिनात। राम लखन विन वाजिये विलपत हैं

दिन रात ॥ १६ ॥ पुरजन परिजनि मातु पितु सखा वन्धु हित दास ॥ राम लषन सिय विनु सबै तजी जियन की आस ॥ १७ ॥ रघुनन्दन सिय बन्धु जुत कीने तापस भेस । चले मुदित गहि विपिन मग रंच न हृदै कलेस ॥ १८ ॥ मगवासी रामहि मिलैं ते लषि होंहिँ अधीर ॥ कहैं कहांकि कौन ये स्याम गौर दुहु वीर ॥१९॥ सुनैं जवै वन गमन तव अधिक हिये विलषाय कहै चलैं हम रावरे संग जु होय रजाय ॥२०॥ कोऊ रघुवर संगही होत प्रेमवस धाय । फेरे फिरत न कहत हैं हम मग देहि वताय ॥२१॥ कोल भील सिय राम हित लावत भेट अपार । कन्द मूल फल फूल अरु षग मृग मीन सिंकार२२ तिन सराहि सनमानहीं कहि रघुवर वर वैंन । सो सुनि सब सुष पावहीं छवि निरखैं भरिनैंन ॥ २३ ॥ कछुक दूरि संग जात हैं कानन पंथ वताय । फिरत नहीं रघुवंसमनि तिन फेरत व- रिआय ॥ २४ ॥ याही विधि रघुवंसमनि सीता लषन समेत । प्रमुदित कानन जात हैं मग वासिन्ह सुख देत ॥ २५ ॥ राज कुवर फिर फिर चितव प्रिया वदन की ओर ॥ ह्वै अधींन मृदु वचन कहि विनवैं सवहि निहोर ॥ २६ ॥ च० क० । येहो भूमि तजिके कठोरता मृदुल होउ येहो भांनु सीत सबै तपनि विहायहो । डोलो

हो विविध पौंन लघुता गहौहो मग कानन गिरिस जाहु बाटतें परायेहो । मोसंग सिधारीं बन जनक दुलारीप्यारी रसिक विहारी हों सुषारी सो उपाय हो । होवैं ना दुषारी सुकुमारी ये विदेह वारी इन हितकारी तुम सकल सहायहो ॥ २७ ॥ दोहा ॥ रघु नन्दन सिय लषन को मुख निरषत फिरि फेर । सीय लषन इत स्याम के रहैं बदन दिसि हेर ॥ २८ ॥ सेवत है सिय रामकों लषन सनेह समेत । दंपति प्रानन ते अधिक करत लखन पर हेत ॥२६ इहि विधि सियरघुवर लषन कियो विपिनि विश्राम । प्रात होत पुनि उठिचले चढ़ो दिवस है जाम ॥३०॥ दोवई छन्द ॥ सिय तन चितै स्याम सुन्दर बर श्रमित जानि सुकुमारी । रघुनन्दन मृदु वचन लषनसें कहे समय अनुसारी।तात लषो तरु छांह मनोहर तहँ विश्राम करीजे थकित भई अति जनक किसोरी अव न पन्थ चित दीजे॥३१॥लषन लाल इत उत निहारीकै इक बट विटप सुहायो। सीतल सघन छांह सुंदर सुचि ठाम अधिक मन भायो। ता तर जाय मृदुल पचनिको रचि साथरी विछाई। कियो तहां विश्राम मुदितह्वै सिया सहित रघुराई।३२ कन्द मूल फल आनि लषन पुनि सीतल जल भरिलाये। बन्धु सीय संजुत रघुनन्दन अति रु

चि भोग लाये । ता मग ह्वै निकसीं पुरवनि-
ता स्याम गौर लषि जोरी। प्रमुदित भईं चकि
तसी चितमें कहैं कहांकी कोरी ॥२३॥ ते सव
जाय सहेलिनमें निज यह चरचा जु चलाई ।
पथिक दोय आये अति सुन्दर मैं अवहीं लषि
आई । वैठे सखी सुभट वट छहियां जवतें मैं
अविलोके । तवतें जिय अकुलात अलीरी नैंन
रुकात नहिं रोके॥२४॥को धौं सषीकहांतें आ
ये तापस वेष वनाये । जिनकी छवि अवलोकि
सहेली कोटि अनंग लजाये। कानन सुनी न
नैंननि देषी रूपछटा अलि ऐसी। पुनि सजनी
तिन संग मनोहर नवल नारि यक दैसी॥२५।
तिनके वचन सुनत वनितनके उर अनन्द अधि
कायो। दरस लालसा लगी घनेरी तन मनमथ
हुलसायो गुरुजन डीठ वचाय संगकी जुरि मि
लिकै सव वामा । देषन चलीं स्याम सुन्दरकी
छटा अनूपललामा॥२६॥आईं जहांरहे मनमोह
न निरषि प्रीति अति वाढ़ी । चकित चित्त ह्वै
रहीं नवेली मनों चित्र लिषि काढ़ी। इक टक
लाय निहारि ठगीसीं भईं निमिष नहिं देहीं।
लै उसास उर ससकि छवीली नैंननि जल भ
रिलेंहीं ॥२७॥कोउ रहीं चिवुक गहिं अँगुरिन
भईं थकीसी कोऊ। कोऊ कर कपोल धरि ठाँ
ढ़ी रहीं जकीसी कोउ । कोऊ दवाय दंततें र-

सना लखें कनेखिन देके। कोउ सीस हाथ दै नवला सोचै वंक चितेके ॥ ३८ ॥ काहूकी जिय राजकुवर की चितवनि पैठि गई है। भूली सकल चातुरी सुधि बुधि विह्वल दसा भई है। काहू के उर लगी लालके नैनवानकी गांसी। काहू के गर परी कठिन अति स्याम प्रीतिकी फांसी ॥ ३९ ॥ काहूके वेनि बंद छूटे भूलिसो न सुधारै। काहूकी सारी सिर सरकी सोउ कछु न सम्हारै। काहूकी आंखिनतें अतिहीं आंसुन धार बहीहैं। काहूकी गति भई वावरी धीर न रंच रही है ॥ ४० ॥ कोउ लाजत्यागि रघुवर को रूप निहारि रहीहै। कोउ निक सकुचाय प्रगट पै हियबिच जाति दहीहैं। कोउ सुरति सम्हारि हेरि छबि पुनि अधीर ह्वै जांहीं कहिन सकैं कछु डर सकोचतें मनहींमन विलखांहीं ॥ ४१ ॥ कोउ कहै सखी ये कोहैं आये इते कहांते। जैहैंकितै किधौं अब रैहैं ऐहैं फेरी यहांते ॥ कोउ कहैं चलो ढिग चलिये भेद सबै मिलि जैंहैं। कोउ कहैं अलीरी हम तौ नैंननकी फल लैहैं ॥ ४२ ॥ ताछिन राज कुवर सिय ढिगतें सहजहिं उठे प्रवीनें। निकटहिं कछुकी दूरि चलि विचरन लगे विपिन चितदीनें। दुपरी दिवस रहो चहुंधांई लागै अधिक सुहायो। लखनलाल वर लै धनु सर

कर बन अहेर छिपा लायो ॥ ४३ ॥ लषि अके-
लि सकुचति ठठकति तिय जुरि सब सिय ढि-
ग जाई। परि परि पांय अय मिलि बैठीं बो-
लि न सकें सकाई। दुहुं करजोरि धीरधरि
इक तिय कहत भई मृदुबानी। हे स्वामिनि
कछु पूछन चाहैं हमहैं नारि अयानी ॥ ४४ ॥
वनबासिनी गमारि नारि हम नीति अनीति
न जानें। चूक छमा कीजो अजान को कोऊ
विलग न मानें। मधुरवचन बोलीं सिय तिन-
सों तुम मम प्रान पियारी। बूझौ कहा कहति
हौ नागरि का अभिलाष तिहारी ॥ ४५॥ बोलीं
ग्रामवधू प्रमुदित ह्वै द्वै तापस ये कोहैं। जि-
नकी छटा निहारि अनूपम कोटि काम मन
मोहैं। जैहैं कहां कहां ते आये कोहैं कौन
तिहारे। कहा नामकित ग्राम धांम कहं हैं
किहिके दुहु वारे ॥ ४६ ॥ कहा तिहारो नाम
छबीली कौन हेतु बन आई। हमहिं अयानी
जानि स्यानी कहिये सकल बुझाई। ग्राम व-
धनके वचन सुनतही जनक सुता मुसक्यानी।
करि सकोच सिरनाय तियन तें बोलीं मृदुल
सुवानी ॥ ४७ ॥ नाम अजोध्या नगर तहां के
दस रथ नृपति सुने हैं। स्याम गौर दुहुं राज
कुवर वर सखि तिनके सुत येहैं। इनकी मातु
कौसिला रानी सोहैं सासु हमारी। अरु देवर

गोरे हैं मोरे लछिमन नाम पियारी ॥ ४८ ॥
सीता नाम हमारो सजनी पिता जनक नृप ख्या
ता । जिहिको पटरानी जु सुनैना सोई हैं मम
माता । सकल कथा वरनी वैदेही ग्रामबधुन्ह
समुझाई । त्याग सकल कुल राज काज बहु जि
हि कारन बन आई ॥ ४९ ॥ सुनि चरचा सब
ग्रामबधुनके लोचन जल भरिआये । गद्‌गद कंठ
परसपर सबही कहैं बचन बिलषाये । कही न
जाय कछू सुन सजनी विधिगति वाम घनेरी ।
अनुचित उचित काज नहि जानै करत जु मनैं
ठनेरी ॥ ५० ॥ पुनि सजनी उन मातु पिता
को निपट कठोर हियो है । जिन दोऊ सुकुमार
सुवन कों हठि बनवास दियो है । राजकुमारि
मनोहर ऐसी पुत्र वधू वरपाई । कानन तिन-
हिं पठावत जियमें रंचहु दया न आई ॥ ५१ ॥
येकै कहैं सषी नृप भोरे तिय चरित्र नहिं जा-
नैं । बचन बद्ध ह्वै गये प्रथम कह होत बहुरि प-
छितानें । येकै कहैं कुटिल कैकेई अतिमतिमंद
अभागी । राम लषन सिय बनहिं पठाये बैरि-
सिखावन लागी ॥ ५२ ॥ येकै कहैं सुनौरी आ
ली भाग्य आपनें जागी । ठईवुद्धि नृप रानिहि ऐ
सी हम सबके हित लागी । कित रामसिय कि
तै अजुध्या कित हम विपिनि निवासी । विधि
संजोग पुन्य पूरबिले भई चरनकी दासी ॥ ५३ ॥

येको कहैं अवधवासी सखि येको जियत न ह्वै-
हैं। येको कहैं अली जड़ चेतन सब इन बिन
जिय ध्वैहैं। येको कहैं भटू जी इनकों बिधि
काननैं पठाये। तौ सजनी वे सदन मनोहर
जगमें वृथा बनाये ॥ ५४ ॥ येको कहैं सखीरी
जो ये कंद मूल फल खांहीं। तौ षटरस व्यंज-
न बहु थाली जगमें रचे व्रथांहीं। येको कहैं स-
हेली ये मग चलें पयादे जोपै। सिबिकादिक
गज बाजि जान बहु बादि बनाये तोपै ॥५५॥
येको कहैं सखी जो इनकों बिधि बन अटन
दियोरी। मृदुल प्रसून बिछाय सकल अंग को-
मल कस न कियोरी। येको कहैं उसासनि लै-
को जो आपनो बसाही। दुहुं बरबंधु सिया सं-
जुत तौ राषिय आंषिन्ह माही ॥ ५६ ॥ येको
कहैं सुनो सिय स्वामिनि बचन कहत हम ड-
रहीं। निरखि रावरी कृपा घनेरी तबहिं ढि-
ठाई करहीं। राज सुता यह ग्राम तियनकी
बिनती सुनि चित दीजे। जानि गमारि न बि-
लग मानिये अनुचित सकल छमीजे ॥ ५७ ॥
कानन कठिन कलेस छबीली तुमही अति सु-
कुमारी। सकल महादुष कैसे सहिहौ ह्वै हौ
निपट दुषारी। कोल भील गज सिंह रीछ क-
पि बिकट सदा बन चारी। डरिहौ तिनैंहिं
निहारि सुंदरी ते लागत भयकारी ॥५८॥ तातें

इतहिं रही वैदेही सबही बिधि सुख पैही। करि हैं सकल रावरी सेवा जो कछु आयसु दैही। हम निज कर तें वर पल्लवकी रचिहैं कुटी सुहाई। सुखी सदा तुम संजुत बसिहैं राम लषन दुहुँ भाई॥ ५९॥ अवधि विताय अवध फिरि चलिवी हम सब संग सिधै हैं। जौलौं इत रहिहौ तौलौं नित लषि निज नैंन सिरैहैं। जबतें सुनो श्रवनतें स्वामिनि इमि बनगमन तिहारो। तबहीते उर काल न परतहै कसकै हृदय हमारो॥६०॥ ग्रामतियनके वचन सुनत सिय बोली मनोहर बानी। जानतिहौ तियधर्म सखीहौ तुम सब परम सयानी। राजकुवर वर स्याम सलोने धर्म धुरंधर आली। चौदह बर्ष प्रमान राजतजि जिन पितुआयसु पाली।६१। तिनकी रुचि जोहोय सखीरी सोई मोहि सुहाही। पति सेवा मन बचन कर्म तियधर्म परम यह आही। सब दुषदानि सुखद उनके संग रंच भीति कछु नांहीं। निरखि पीय मुखचंद सहेली हम दिन रैनि अघांहीं॥ ६२॥ इत बसरात रहीं तिय सियसीं उत मन रघुबर पांहीं। दरसैं कबहुं दुरैं आबहूं चलि बन तरु लसिकन लांहीं। बिहरत फिरत बिपिनिमें लालन निरखि नवेली बामा। सकुचतिसी चितवैं तिहि ओरै जित डोलत घनस्यामा॥ ६३॥

मिसतें उठि सिय छिगते सब तिय स्याम नि-
काट धुरि आईं । निरषि लालकी छटा छबी-
ली नैंननि जल भरि लाईं । ललन घोट ठाढ़े
रघुनंदन लषि बोली इक बामा । हम रावरे द-
रस हित आईं हे सुंदर घनस्यामा ॥ ६४ ॥ तु-
मह्णे राजकुमार छबीले हमहैं नारि गमारी ।
करें काहा लषि रूप तिहारो लागी प्रीति हमा-
रि । निरषि रावरी छटा लाड़िलि सब कुल का-
नि निवारी । रुकत नहीं तन प्रान राषिये घ-
ब काहंलों मन मारी ॥ ६५ ॥ हम सब तिय
तुव पास छबीले बिनै कारन कछु आईं । सो
सुनि मानि लेउ हे प्यारे करियो जनि बरि-
आईं । सुनो लाल बन गमन तिहारो तबतें अ-
ति बिलपाती । तुमहिं बिलोकि विपिनि दुष
सुमिरत फटति हमारी छाती ॥ ६६ ॥ एती
बिनै सुनी हो प्यारे सबइ दीन निहोरें । प्रान
अधार मानि लीजो यह सीस नाय कर जोरें ।
सिया बंधु संजुत मनमोहन इतहीं अवधि बि-
तावो । सब रितु इहां सुषारी रहिहौ कितहूं
अनत न जावो ॥ ६७ ॥ कै पुनि संग लेउ ह-
म सबही चलीहैं साथ तिहारे । तुमहिं बिहा
य सुहाय और नहिं घर पुर सकल बिसारे ।
करिहैं सदा रावरी सेवा बिना दामकी दासी ।
और कछू न चहैं हे प्यारे हैं तुव रूप उपासी॥६८॥

और न कोउ सुहात सांवरे तुम कछु टोना कीनो। येक छटा दरसाय छबीली तनमन सब हरि लीनो। कै अब ईतही रहौ लाड़िले कै सबही संग लेहु। अबला अवल जानि हे प्रीतम जनि बिछुरनि दुख देहू ॥ ६९ ॥ सांची प्रीति हमारी प्यारे हम छल छंद न जानैं। तुमहि दियो तन प्रान आपनों करहु सु जो मन मानैं। हैं सब ग्राम निवासिनि भोरी लखि तुव रूप लुभानीं। तिन पर कृपा करो हे रघुवर दीन हीनमति जानी ॥ ७० ॥ तिनकी प्रीति रीति सांची लखि रघुनंदन हरषाने। बोले वचन धीर दै सबही नीति नेह रस साने। यौं अधीर जनि होहु छबीली तुम हौ परम सयानी। लोक लाज कुल धर्म निहारौ कैसी भई अयानी॥७१ पितु आयसुतें राज त्यागि हम ह्वै तापस इत आये। चौदह वर्ष न जांहिँ ग्राम वन रहैं परण गृह छाये। येक जटिल दूजे परदेसी तुम हौ नारि ललामा। हमरो तुमरो संग सयानी नही बनै अभिरामा ॥ ७२ ॥ सबहो बसौ सदा मेरे हिय सुधि राखियो हमारी। फिरिहैं अवधि बिताय वेगि हम मिलिहैं फेरि पियारी। तुमरो धर्म यही है सुंदरि पति सुतमें चित दीजो। हृदै हमारो ध्यान राखियो नीतिकाज नित कीजो ॥ ७३ ॥ राज कुवरके वचन सुनत सब वा

म विकल विललान्हीं ॥ इ अधीर मोहनतें बो-
लीं विरह प्रीति जुत बानी । तुमहौ नृपतिकि-
सोर लाड़िले नीति धर्म बहु जानो । लोक ला
ज मरजाद वेदकी सकल रीति पहिचानो॥७४॥
हमहैं नारि गमारि सांवरे धर्म कर्म नहि जा-
नैं । मन लगिजाय छैल जाहीसौं ताहीको हित
मानैं । रायें सांची प्रीति लाड़िले एहीधर्म ह
मारे । प्यार एकरस सदा निवाहैं सुनिलें वचन
पियारे॥७५॥सुनौं वैंन हे यार वटोही अवला अब
ल सदांहीं । ताहूपै पुनि ग्रामनिवासिनि कछू
चातुरी नांहीं । छल बल एको रंच न आनैं के
वल प्रीति पियासी ॥ सांचो नेह लगै जाहीसौं
ताहीकी हमदासी ॥ ७६ ॥ जवते रूप तिहांरो
हेरो तवते सकल लुभानी । पति सुत धाम त्या-
गि हे प्यारे हम तुव हाथ विकानी । जिय भा
वे सो करो लाड़िले मारो चहो जिवावो । पै
यह विनै मान मनमोहन अव न रंच विलगा-
वो ॥ ७७॥ परम प्रेम मय वचन तियनके सुनि
बोले रघुराई । तुम जु कही बानी रस सानी
सब मेरे मन भाई । मानो सीष हमारी येती
सकल बाम गृह जाहू । कबहुंन कोऊ मोहि
बिसरियो मैं भूलौं नहिं काहू॥ ७८ ॥ लगे स्या-
मके वैन बानसे बोलीं सब अनखाई ॥ हाय ह
मारी पीर सांवरे रंचहु तोहि न आई।प्याय सु

था फिरि विष-दै मारै ऐसे गुन नहिं जानै। कारे कपटी होत सांचहूं अब नीकों पहिचानै ७९ ॥ कोउ बोलिउठी सुन सजनी और उपाय न कीजे। सब बिरहिनी बाम जुरि मिलिकै प्रान इनहिं ढिग दीजे। कोउ कहै अरी आली यह जतन करो सब कोउ। अंग भभूत रमाय त्यागि घर सकल फकीरिन होउ ॥८०॥ कोउ कहै हाय हे छैला मैं तुमरी बलि जाऊं। अब जनि मोहि सताव पियारे पद गहि हाहा खाऊं। कोउ कहै सांवरे तुमतौ राजकुमार कहावो। ऐसी निठुराई नहिं चहिये नेंक दया उर लावो ॥८१॥ कोउ कहै हाय हे प्रीतम डारि प्रीतिकी फांसी। करी मोहि अधमरी छोड़ि जनि जाओ मीत बिसासी। कोउ कहै स्याम यह तुमरी नेंक चितौंनि तिरिछी। रोमरोम विधि गई हमारे कुअत चढ़ी जनु बीछी ॥८२॥ कोउ कहै सखी रघुबंसी इनहिं दया नहिं आवै। करत अहेर हेर मृग छौनन रंचन हिय कसकावै। कोउ कहै अली ये तापस प्रीति रीति का जानैं। कोउ कहै भटू निरमोही मोह न नेंकहु मानैं ॥८३॥ कोउ कहै सखी कहुं इनकों बिरह पीर नहिं व्यापी। कोउ कहै भटू सब कारे लखियत पर संतापी। कोउ कहै अलीरी इनको निपट कठोर हियो है। कोउ कहै ऐस-

हो गुनतें पितु बनबास दियोहै ॥८४॥ कोऊ
कहै स्याम निरमोही अब तू जनि दुख देरे। कै
इतहीं रहु प्रानपियारे कै सबही अँग लेरे। को-
ऊ कहै अरे निरदैया इतनी कृपा किये जा। नि-
ज करते सब तियन मारिकै प्रानन साथ लिये
जा ॥८५॥ कोऊ कहै लाल तुम लाषनको जिय
लीने हूँ ही। कोऊ कहै प्रान अबही कृह कोटि
गच्छको लैहै। कोऊ कहै सषी इनके हियं रूप
गुमान घनेरो। कोऊ कहै लरकापन आली कू-
टो नहि बहुतेरो ॥८६॥ कोऊ कहै भट मत्स्सेर
घन पाई नारि सयानी। तातें जीय ने रंचहु
भावें हम सब निपट अयानी। कोऊ कहै चरन
गहि रहिये कैसे फेरि तजैंगे। कोउ कहैं निरदई छ-
ली ये नेक न लाज लजैंगे॥८७॥ कोउ कहै बर
जोरी राखें हमतो जान न देहैं। कोउ कहै जित
चहैं जांय तित अबतौ संग सिधैहैं। कोउ क-
है सबही चलि ह्वै जोगिनि इनके पाछे। ला
ज काहा तसे नाच नाचियें बीर काछ जस का-
छे ॥८८॥ कोऊ कहै सषीरी इन बिन धिग जी-
वन सबहीको। सुत पति हित धन धाम भोग
सुष एकौ लगत न नीको। कोऊ कहै भली अ-
ति कीनी स्याम जु इतहू आये। कोऊ कहै
हमहिं मारनको कारन बनहिं सिधाये ॥ ८९ ॥
कोऊ कहैं लाल कहु सांची कितनी अबलामा-

री। कीनी काहां घायलैं कैती किती तजीं ध-
धमारी । कोउ कहै सषीरी इनके जहां जहां पग प
रिहैं। तहां तहां सबही बनितनकी ऐसीही
गति करिहैं ॥९०॥ कोउ कहै जहां ये सजनी
हूंहैं रहत सदाई। ता पुरमें क्यौं बसत होंइगे
हेली लोग लुगाई। कोउ कहै सुनैारी सजनी
राजकुमार नहीहैं। ये रति काम देह द्वै धरिकै
आये बनहि सहीहैं ॥९१॥ कोउ कहै कहा अ-
ब कीजे सबहि जतन करि हारी। रंचहु कस-
क न आवत इनको निपट कठोर हियारी। को-
उ कहै हम ओर हाय वलि नेक निहार छबी-
ले। जीय दया कछु लाव लाड़िले हो न निठु-
र गरबीलें ॥९२॥ कोउ कहै सुनैा हो प्यारे जो
हमको कलपैहो। सब विरहिनिकी हाय परै-
गी तो तुमहुं न कल पैहो। कोउ कहै पाय छ
बि नीकि छैला गरब न कीजे। धन जोबन न-
हिँ रहत सदाहीं जस जगमें करिलीजे ॥ ९३॥
कोउ कहै अरे निरदैया क्यौं इतरात घनेरो।
कछू बोलतो रहो मौन क्यौं हर कलेस यह मे
रो। कोउ कहै सषी या ढिगते चलिय गेह म
न मारी। देषि देषि याकी छबि औरो पीर उ-
ठत उर भारी ॥९४॥ कोउ कहै भटू विधि इ-
हिको जो ऐसी छबि कीनी। तो सजनी याके
जिय काहे रंचहु दया न दीनी। कोउ कहै स-

षी काहूकों काहे दोष लगैये। जो कछु होनी होय होय सो कर्म लिखे फल पैये ॥ ९५ ॥ कोउ धाय जाय रघुबरके चरन परीं अकुलाई । कोउ हाय हाय करि रोवनलगीं सामुहे आई । बिरह नेह बस बिकल सबै तिय तन मनकी न सम्हारा । बिह्वल बचन कहैं नैं ननतें चलीजात जल धारा । ९६ । तिनकी प्रीति निरषि नृपलालन नैंन नीर भरिआयो । गद गद कंठ ह्वै उमगानो सकल अंग पुलकायो । उर धरि धीर कही सबहीसों रघुनंदन मृदु बानी । हे सुंदरी प्रीति सब तुमरी मेरे हीय समानी ९७। तुम सबही मम प्रानपियारी मैं हौं तुव आधीनों । सांचो नेह सदा मुहि भावै रंचै न प्रीतिविहीनो । जाके जिय जैसी अभिलाषा तैसी ताहि पुजैहौं। हे भामिनी बिखग मति मानौं मनमानों सुष दैहौं । ९८ । कहि कहि मधुर बचन रघुराई सब उर धीर धराई । संध्या समै जानि सिष दैकै निज निज गेह पठाई। अपने अपने भौंन गईं तिय जिय रघुनंदन मांहीं । जकी थकीसी रहीं वैठिकै मनहीं मन बिलषांहीं । ९९ । उत रघुनंदनमें मन अटको इतै लाज गुरु जनकी। दुआदुरायरहीं सबही तिय राखि मनहिंमें मनकी । होय प्रात कब चलिंयें लाल ढिग औद न रंचहु आवै । छिनं छिन ल-

यें चंद निसि तारे जुग संग्राम पख जावै ।१००
इतै रैनि बसिकै रघुनंदन प्रातहिँ बिपिनि सि-
धारे । ग्रामबधुनकी प्रीति सराहत चलेजात
मग प्यारे । दोऊ सिय रघुचंद परसपर तिन-
हींकी सुधि करहीं । सांचो नेह बषानि तिय-
नको अति अनंद उर भरहीं ।१०१। निसा बि-
गत तिय उठीं मुदित सब करि गृह काज उ-
ताली । गुरु लोगनकी डीठि दुरैकै चलीं तहां
मिलि आली । आंईं जहां रहे दूरहितें लषे न
स्याम निहारे । हिय धकधकी उठी सिगरिन-
के हेरैं चहुं कित प्यारे । १०२ । जाय निहार-
तभईं सु बट तर सूनि साथरी पाई । निरषत-
ही सब स्याम हाय करि गिरीं धरनि मुरझाई ।
घोर शोर करि रोवन लागीं कहैं गये कित प्या-
रे । आसुन धार बही नैननतें तन मन प्रान
बिसारे । १०३ । कोउ भूमि परी रज लोटै को-
उ फिरै बिललाती । कोउ सीस धुनै व्याकुल
ह्वै कोऊ पीटति छाती । कोऊ हाय स्याम क-
हि टेरै कोऊ मौंन रहीहै । कोऊ लेति उसास
आह भरि कोऊ बिरह दहीहै । १०४ । काहू
की सारी तनतें गिरि लतिकनमें उरझानी ।
काहूकी कंचुकी फटी सब सुधि बुधि निपट न-
सानी । काहूके अँगनतें कोते भूषन टूटि परेहैं ।
काहूके आननपै दुहुँ दिसि कुंतल छूटि परेहैं

१०५ । काहूके तनमें तरु बेलिनतें जु खरौंट परेहैं । काहूके पांयनिमें कांटक लागि अमित परेहैं । काहूके अति विरह ज्वालते मुखसें फन वहेहै । काहूके सब अँगनि माहीं स्वेद जु छाय रहेहै । १०६ । राज कुंवरके बिछुरत सबही भईं बावरी बाला । जें जिय आवै कहैं करें सो भई वियोग बिहाला । कोउ करि करि शोर रोयकै हसत निसंक वहोरी । कोउ हाय मारि फिरि नाचैं पुनि बैठैं सुप मोरी । १०७ । कोउ मनहीते वतरावैं अरु अनषांयँ रिसावैं । कोउ विरह कबित्त छंद कहि फिरि चुपहूं सिर नावैं । कोउ भानु भूमि नभ पच्छिन्ह तरु गिरि निकट बुलावैं । कोउ कहैं लाल वे ठाढ़े चली चली री धावैं । १०८ । कोउ दौरि चढैं तरु गिरिपै इत उत चहुं दिसि हेरैं । आउ आउ हो स्याम सनेही फिरी फिरी कहि टेरैं । कोउ धाय गहैं नव पल्लव कहैं दौरियो आली । हम कारगहिं राषे मनमोहन दुरे हुते इत ख्याली । १०९ । कोउ निज परिछाहीं लषिकै ताहि गहनकों धावैं । कहैं वेगि आवोरी पकरी लाल भगे ये जावैं । कोउ लषि प्रतिविंव वारि बिच बोलैं अति बिलषाई । धाव धांधरी आव वेगहीं ये ठाढ़े रघुराई । ११० । कोउ झुंकि झुकि भूमिं पंथमें चरण चिन्ह चहुं हेरैं । कोउ

खग मृग तरु लतिकनकों ... जाय भाल घर। कोउ कहैं सखी हम सबकों आवत देखि दुराने। कोउ कहैं भूली ये कालिंदि निसिही मांझ पराने। १११। कोउ कहैं सुनौरी सजनी हैं दुहु बधु अहेरी। खेलन गए भटू काननमें आवत ह्वै हैं येरी। कोउ कहैं अली टुक टेरी हैं किहि ओर चलीजे। कोउ कहैं सखी चुप साधौ इतही आवन दीजे। ११२। कोउ बिरह अधीर बिकल ह्वै टेरन लगीं सु बामा। हाय प्रानप्यारे अब आवो किते गये घनस्यामा। कोउ कहैं लेत कहें प्रीतम हमरी प्रेम परिछा। हैं सब बिकल बियोग तिहारे आय करो कछु सिछा। ११३। हे लाड़ीले सुजान छबीले अब टुक मुख दरसाजा। बिरह ज्वालतें जरत सबै तन नेह सुधा बरसाजा। तो बिन हे दिलदार पियारे निकसैं प्रान हमारे। हिये दया कछु लाय जिवाले हे प्रीतम इत आरे। ११४। कहां दुरेहो जाय बिपिनिमें बोलौ मीत बटोही। कलप समान पलक बीततहै स्याम मोहि बिन तोही। पहिले मारि नैंन बाननतें सब घायल करिडारी। प्रीत लगाय हाय हे प्यारे काहे सुरति बिसारी। ११५। राज कुमार सुजान जानिकै हमलुमसों हित कीनो। ऐसे निपट अजान कढ़ेजू मोहि अधिक दुख दीनो। या बिधि बिक

व याम बहु विरहिनि विरह भरीं बिललाहीं। धाय धाय इत उत जिन तिनसों बुझतिहैं सब पांहीं।११६।तरु गिरि महि सरिता षग मृग को जड़ चेतन नहिँ सूझैं। निज प्रीतमकी षबरि दीनहू धाय सबहिसों बूझैं। कहैं अधीन वचन कर जोरैं अब जनि कोउ दुरावो। प्यारे प्रानअधार सांवरे हैं किहि ओर बतावो। ११७। कालित छंद॥ हे असोक तुम सोक हरो सबहीके। क्यों न मिलावो मोहन जीवनजीके। हे कादंब बलि अब विलंब जनि लावो। राजकुवर रघुवरकों कमहिँ बतावो। ११८। हे रसाल कहु लाल कहूं इत हेरे। पहुंचावोजू बेगि हमैं उन नेरे। हे पीपर तुम हीपर दया जु लावो। सुन्दरस्याम सजनकोरूप दिषावो।११९।हे पाकर अब इती कृपा कर देही। कहां बतादे मोकँह स्याम सनेही। हे तमाल रघुलाल कहूं तुम पाये। कही कितै मुहि तजिकै रहे दुराये। १२०। हे बट तुम तजि कपट बचन टुक बोलो। भये अचल यों काहे रंच न डोलो। तुमहूंसे कहिगये कछू मम प्यारे। रहे रैनि दिन तो ढिग मीत हमारे १२१। हे अनार कचनार यार निरमोही। कितै बतादे मोहि निहोरौं तोही। हे मलास तुम आस पुजावो मोरी। कहां दिषावो लाल काहीं कर जोरी। १२२। हे चंदन रघुनंदन-

रूप दिखावो । बिरह ताप मो उरकी सकल सिरावो। हे कदली कस बदली बुद्धि तुमारी । कहां बतावो स्याम लेति बलिहारी । १२३ । हे अवनी दुष दवनी हो सबही की । कही लाल कित हरी बिथा मो जी की । हे मग तुम पग चिन्ह बतावो मोही । गये कहां ह्वै सुन्दर छैल बटोही । १२४ । हे समीर बलि बीर पीर हर मेरी । किते गए रघुबीर धीर मुहि देरी । धाय लाल ढिग जाय मोहि सुधि लादे । उनहूं-कों यह बिरहिनि दशा सुनादे । १२५ । हे स-रिता तप हरिता तुमहु कहावो । जरे हदे यह मेरो क्यों न सिरावो । हे सरोज प्रीतमको षोज बतावो । कहां दुरे मनमोहन बेगि दिषा वो । १२६ । अहो मीन जल हीन दशा तुव जै सी । स्याम सुघर बिन तलफतहैं हम तैसी । हाय न कोउ सहाय आय होजावै । बिरह अ-गिनि मो हियकी विषम बुझावै । १२७ ।अहो भौंर बहु ठौर सदा तुम डोलो । लषेहोयं कहु लाल बेगि तो बोलो । वेऊ कपटी छैल तुमहि-से कारे। प्रीति लाय हरि लैगे प्रान हमारे।१२८। हो षंजन मन रंजन नैंन तिहारे । हम जानी कहु निरषेहैं तुम प्यारे। हे मैंना वर बैंना क्यौंन सुनावो । गये पथिक किहि ओर जु हमै बतावो। १२९ । हे सुआ तुम टुक बोलो मधुरी बानी ।

काहू निहारे रघुवरे रूप गुमानी। अरे कांग व
लिभाग तोहि वलि देहौं। मोकहँ संगुन वता-
व स्याम कव पैहौं। १३० । हे हरिनी मन ह-
रनी आंखि तिहारी। रूप लालनकी तुम काहु
छटा निहारी। हे दिसि किहि दिसिगये सांवरे प्या
रे। जाही मीत विन तरसंत प्रान हमारे।१३१। हे
गिरि हौ अति ऊँचे फिरि चहुँ हेरौ। लखौ जा-
त कित लाल वेगि टुक टेरौ। अहो मोंर मि-
लि सारे शोर मचावो। विरह कलपना मेरी
सकल सुनावो।१३२। अरे पपीहा तू प्रीतम ढि-
ग जारे। दीन वचन कहि पीउ पीउ रट लारे। हू-
क उठै सुनि कूक कोकिला तेरी। नेंक मौंन
गहु हाय न सुहि दुष देरी। १३३। अरे चंद म-
ति मंद अंग जनि जारै। पंच वान उर वान हा-
य क्यौं मारै। अरी रैनि दुष देनि सिरात न का
हे। अरे विरह मो सकल अंग कस दाहे।१३४।
अल वल बोलैं विकल विरहिनी वामा। तिनहिं
कछू न सुहाय विना घनस्यामा। सुधि बुधि भू-
लि गई है सब तन मनकी। घर पुरकी नहिँ सु
रति भई वनवनकी। १३५। कोऊ कहूं विहाल
वैठि पछिताती। कोऊ करि करि हाय धुनै सिर
छाती। भई वावरी कोऊ इत उत दौरै। कोऊ
विहवलगिरी परी छिति छौरै।१३६।को ऊतिय-
तियाकों भुज गहि लेही। काहे चले कित तजि-

के स्यांम सनेही । बोलैं कोउ गहि तमाल अकुलाई । आउ आउ री हम पाये रघुराई । १३७ । काहूके सिर केस पुले न सम्हारैं । काहू त नतेंबसन गिरे नहिँ धारैं । काहूकी पट फटे कंटकन माह । काहू लगी छरीट कछू सुधि नांही । १३८ । हाय हाय कहि कोउ उसासनि लेहीं । कोउ काहुहि कैसहु उतर न देहीं । भई बापरी रघुबर बिरह बधूटी । लोक लाज कुल रीति नीति सब छूटी । १३९ । कोउ कहै सषि हाय कहो कित जैये । कोउ कहै यह काकों बिरह सुनैये । कोउ कहै अली उन बिन धिग जीनों । कोउ कहै विधाता यह दुष दीनों । १४० । कोउ कहै सषी सो निठुर महाहै । कोउ कहै तापसकी प्रीति कहाहै । कोउ कहै मुहि हाय संग नहि राषी । कोउ कहै कछु चलतहु मीत न भाषी १४१ । कोउ कहै हूं जोगिनि भस्म रमैहे । सब मिलि स्यामहिँ हेरन ज़ित तित जैये । कोउ कहै सखीरी हम तन दैहैं । मनमोहनकी ढिगहीं प्रान पठैहैं । १४२ । कोउ कहै अली हम अब लषि पावैं । तो छिनहूं भरि नैंननतें न दुरावैं । कोउ कहै सषि होनी हुती भई सो । कोउ कहै कारी तसि दृई दई सो । १४३ । कोउ कहै अलि कारो कठिन महाहै । कोउ कहै तापसकी प्रीति कहाहै । कोउ कहै कपटी जस मुहि दुष दीनो । सोउ त-

स फल पैहै अपनो कीनो । १४४ । कोऊ कहै सषी सांवलिया भोरो । ताकी संग महाहै छलिया गोरो । कोउ कहै अली सो नारि सयानी । हम सबकों लषि लै निज पियहि परानी । १४५ । कहैं वचन सब जाके जिय जो आवैं । रघुनंदनकी बिरह बिकल बिललावैं । ताही मग ह्वै येक पथिक तहँ आयो । तिहि बिलोकि सब बनितन अति सुष पायो ॥१४६ घेरि लयो तिहि धाय जाय सब नारी । चकित भयो सो तिनकी दशा निहारी । कहै पथिक तुम सब हो कौन कहांकी । कछू न बोलैं बाम स्याम मद छाकी । १४७ । बैठि गयो द्रुक तरु तर बिबस बटोही । घेरि रहीं चहुं फेर बाम सब वोही । बूझतिहैं मिलि षबर मीतकी तासों । कहन चहैं कछु कछू कढ़ै रसनासों । १४८ । कहो पथिक तुम सांचे वचन सुधारे । कहूं निहारे हमरे प्रानपियारे । स्यामगौर द्वै बँधुं सुभग धनु धारी । है तिनके सँग येक मनोहर नारी । १४९ । कौनें तापस बेष तिन्हँ वनचारी । कहो बटोही तुम कहुँ छटा निहारी । लछिमन नाम सुगौर रामहैं स्यामा। सीता नाम ललाम बाम गुण धामा । १५० । अबिलोकि तुम होयँ कहूँ तौ बोलौ । रंच न राषो हियें गांठि बलि षोलौ । पथिक तिहारे

पांय परौं कर जोरी । कहौं स्याम सुधि निर-
षि दीनता मोरी । १५१ । भई बावरी बिरहि
नि सिगरी बाला । कहैं पथिक कित मिले तु-
मैं रघुलाला । कहो कछू हम सबसों स्याम सँ-
देसो । पाई षबरि न मो जिय अधिक अँदे
सो । १५२ । काहो कहा कहि भेजो वह निर-
मोही । कै पाती लिषि दई बतावो मोही । कै
हम सबको भेद लेन तुम आये । राजकुवर छ-
ल करिकै सिषै पठाये । १५३ । बारबार तुव
पाय पथिक हम परहीं । हाथ जोरि सिर नाय
बिनै बहु करहीं । वा निरमोहीको कछु षबरि
सुनावो । तिहि बिन तलफत प्रान सु हाय ब-
चावो । १५४ । येकै तिया बटोहीसों कर जो-
रैं । येकै तिहि निज सीस नवाय निहोरैं । ये-
कै कर झझकोरि कहैं कछु तेही । बूझैं बूका गु-
लचाय कहो कित नेही । १५५ । येकै पूछैं बा-
त बलैया लैकै । येकैबिनवैं ताहि चिबुककर देकै ।
येकै कहैं अली यह बौरो नर है । याकों निज
तन मन की कछु न षबर है ।१५६ । येकै कहैं
भटू इन स्याम निहारे । तब डोलत बहु सुधि
बुधि सकल बिसारे । जौ इन छबि न लषी हो-
ती लालनकी । सुरति न जाती तौ याके तन
मनकी । १५७ । येकै कहैं अली यह उन ढिग
जैहै । बिरह दशा या सबकी सकल सुनैहै । ये-

कै कहैं कछू तौ बोलै कसाई। तौ हियमैं कछु रंचहु दया न आई।१५८। येकै कहैं पथिक प्रीतम ढिग जैयो। हमदिसितै पग परि परिविनय सुनैयो। कहियो तुम बिन बिलपतिहैं सब बामा। तिनहिँ जाय सुष देहु बेगि घन स्यामा। १५९। येकबेर फिरि आय बदन दरसावैं। कहियो पुनि जित जिय भावै तित जावैं। कहियो जबतें नैंन बान तुम मारे। तब तें निसि दिन तलफत प्रान बिचारे। १६०। कहियो लालन जौ न बेगि तुम जैहौ। तौ-मरिहैं सब विरहिनि जियत न पैहौ। काहियो आय सु प्रान दान दै जावैं। नाहींतौ निज कारतें जिय लै जावैं। १६१। कहत बैचन विरहिनी नेह मद छाकी। सही जात नहिँ पीर वियोग बिथाकी। अहो पथिक उन पास जाय फिरि आवौ। कहा कहो मनमोहन मोहि सुनावौ। १६२। कोउ लै कर कंकन पथिकहि देही। कोऊ निज मुद्रिका देतिहै तेही। कोऊ तिय भुजबंद देइ अति नीको। देनलगीहै चंद्रहार वर ही को।१६३।कोउ बेसरि कोऊ कुंडल देही। सीसफूल मंजीर देय हठि केही। करनफूल नथ झूमक कोउ उतारै। चंपकैली वर माल कोउ कर धारै। १६४। पथिक नहीं कछु लिय देतिं बरजोरी। पाय परैं तिय विनै क

रैं कर जोरी । कहैं पथिक तुम बेगि स्याम सुधि लावो । येकबेर रघुबर सों हमहिं मिलावो १६५ । तिनकी प्रीति निहारि पथिक हरषानों। बंदि चरण निज जन्म सुफल करि मानों । धन्य बाम ये शुद्ध प्रीति अति सांची । लाज त्यागि रघुराज रंगमें रांची । १६६ । तिनहि धीर दै कही पथिक मृदु बानी । धीर धरो निज हियमें परम सयानी । यों जनि होउ अधीर बिरहिनी बामा । तुमहिं मिलैंगे बेगि राम अभिरामा । १६७ । धर्म धुरंधर राम बिषै रसरूषे। रहत भक्त आधीन प्रीतिके भूषे । तुम उनसे नहिं दूरि न वे तुमसेहैं । दुहूं निकटहो दोऊ दुहूं हियेहैं ।१६८। रैनि दिवस तुम सब ज्यों उनहि रटौही । तिय सिगरी त्यों तिनके हिये बसौही । वे सबहीके जी की जाननि वारे । दूरि करैंगे सकल कलेस तिहारे। १६९। पथिक धीरदै सबही बहु समुझाई । बिरह अगिनि कछु कहि रस बैंन बुझाई । कहिं वियोगिनि बाल बटोही प्यारे । और स्यामकी चरचा फेरि चलारे। १७० । फेरि बिरहिनी बिकल भई अकुलानी । हाय लाल कहि टेरन लगीं सुबानी । बिरह बिवस तिन सुधि बुधि पुनि बिसराई । उठो बटोही ताछिन औसर पाई १७१ । तिन चरननकी रज निज नैंन लगाई ।

चलत भयो कछु भिसते डीठ बचाई। चलो जात मग पथिक नैन जल छावै। करि करि तिनकी सुरति हिये हुलसावै।१७२। इते बिरहिनी बाम अधिक अकुलानी। हाय बटोही गयो कहैं बिलषानी। धाय धाय चहुं ओर जाय तिहि हेरैं। कोऊ कहुं न दिषाय बैसहीं टेरैं।१७३। कहैं पथिक कित गयो नेंक इत आरे। मेरो कछू संदेसोतौ ले जारे। इहि बिधि करति बिलाप बिकल सब नारी। बढ़ी पीर उर लागी बिरह कटारी।१७४। ताही छिन चहुं ओर घेरि घन आये। बरसन लाग्यो नीर अधिक छिति छाये। झोका देत समीर, दामिनी कौंधै। जाको चमक निहारि नैन चकचौंधै।१७५। नटत मोर बन पचिन शोर मचायो। सुनि बिरहिनि हिय दूनो बिरह बढ़ायो। नीर बुंद जो परैं तियनके तनमें। रंचकहू न लषाय सु छनकौं छनमें।१७६। देषतही घनस्याम बिरहिनी बाला। रोय उठीं अति भई बिरह बेहाला। कान्ह कह्यो भटू जैसे घन कारे तैसेहीमन मोहन अपने प्यारे।१७७। कोऊ बिरहिनि कहै मेघ इत आरे। तो लषि सीतल होत सुनैन हमारे। वेऊहैं घनस्याम तुमौ घनस्यामा। दोउनको है येक रूप गुन नामा।१७८। कोउ कहै घन इतै नहीं तुम छावो। जिते होइं

मनमोहन तितै सिधावो ।.उनहीके ढिग जाय
घेरि झारि लैयो । यह दुष मेरो उनहि जनाय
सुनैयो । १७९ । नैह बिरह बस ग्रामवधू कार
जोरैं । सीस नाय ह्वै दीन जु सबहि निहोरैं ।
कानन जोग न हैं सुकुमार पियारे । ते बनबन
यौं डोलत पांय उघारे। १८०। तुम सबही मि
लि प्रीतमकों सुख दीजो। जड़ चेतन निज
जन्म सुफल करि लीजो। अहो मेघ तँहँ की-
जो छांह सदांहीं । सुंदर स्याम सलोने जँहँ जँ
हँ जांहीं। १८१ । अहो पवन नित त्रिविधि ला-
ल हित ढरियो। होन न पावै सकल स्वेद श्र
म हरियो । अहो चंद रघुचंद अनंद करीजो ।
अहो रैन प्रीतमहिं चैन बहु दीजो ।१८२ । अ
हो भूमि तुम तहां मृदुल अति होऊ। जहां
जांय सिय सहित बंधु वर दोऊ । अहो पंथ ल
घु सुगम स्वच्छ सुचि रहियो। राजकुवर कों मो
द सहित निरबहियो । १८३ । रघुवरकी हित
हेतु अहो तरु बेली । फूलौ फलौ सबै रितु स-
मय सकेली । अहो भानु तुम उनके कुल पति
हो जू । राजकुवर सुष हेतहि सीत गहौजू। १८४।
सब पसारि निज अंचल बिधिहि मनावैं । जहां
रहैं रसिकेस तहां सुख पावैं । देव पुजैयो बे-
गहि आस हमारी । रसिक बिहारी बेगहि मि
लैं सुषारी ॥ १८५ ॥ दोवई छंद ॥ सब रघुवर

छवि छकी छवीली तन मन गृह सुधि भूली। राजकुवर घनस्याम सुघर बिन बिरह सूल हिय झूली। सकल दिवस निसि वन वन बिलपत रहीं नवेली बाला। घर पुर जन अकुलात सोच बस खोजत फिरत बिहाला॥ १८६॥ तीजे दिवस बिपिनि बिच पांई तिनकी दशा निहारी। भये बिकल पुर परिजन अतिही बढ़ो सोच उर भारी। कहो कहा बूझैं यह तिनसों कछून उत्तर देहीं। लै उसास उर ससकि सबै तिय नैंनन जल भरि लेहीं। १८७। काहू तन हेरैं नहिं काहुहि कछू न भेद बतावैं। लै हिलकी तिय सीस नाय कहि हाय स्याम रहि जावैं। तिन सब बनितनकों निज निज गृह लाये करि बरियाई। सुनि चरचा जित तितते धाये देषन लोग लुगाई। १८८। तिनकी दशा बिहाल बिलोकत पुर परिजन अकुलाने। जाय जाय जिहि तिहि सब टेरैं फिरत बिकल बिलषाने। कोउ आय जैंठेरी तिनपै राई नोन उतारैं। कोउ गुनी मयूरपच्छ कुस लै पढ़ि मंचन झारैं। १८९। कोउ कहै इनै कछु लागो कोउ कहै डरीहै। कोउ कहै कोउ इन ऊपर दृढ़ करतूति करीहै। कोउ कहै व्यथा अति बाढ़ी कोउ कहै रिसानी। कोउ कहै भई ये बौरी कहैं सबै मन मानी। १९०। जंत्र

मंत्र अरु तंत्र टोटका किये अनेक उतारे। का-हूको काछु फुरो न येको अमित जतन करि हा-रे। सबै थकित ह्वै रहे मौन गहि रंच उपाय लगी ना। चकी जकीसी रहीं सकल तिय नेकौ पीर भगी ना। १६१। जदपि रहैं गृहमांहि तदपि पै दिनहीं दिन मुरझाहीं। झूठै गेह मधि देह बसै उतप्रान प्रानप्रिय पांहीं। सबहि सिंगार भोग सुष त्यागो रहति सदा मन मारीं। स्याम नाम निसि दिन उर सुमिरैं अवधि आस जिय धारी। १६२। बरवाछंद॥ ग्रामबधू सब झिलिमिलि पनिघठ जांहिं। स्याम सुरति उर झरिकरि अति बिलषांहिं। १६३। बोलति बिकल बियोगिनि दीन अधीन। वृथा जियव अब सजनी स्याम बिहीन। १६४। हम न आज लग जानी बिछुरनि पीर। अब पहिचानी मोहन बिछुरे बीर। १६५। कोउ कहैं सषीरी काछु न बसाय। मारिमारि मन रहिये करिकरि हाय। १६६। वह मधुरी रसबोलनि कसकत जीय। वा तीरछी रसहेरनि पैठी हीय। १६७। कबहूं फिरि अब ऐहैं इहि मग लाल। हमहिं बहुरि दरसैहैं बदन बिसाल। १६८। सो दिन धौं कब होइहि अति अभिराम। जादिन प्रीतम हेरैं फिरि सब बाम १६९। दई देवताकित धौं गये पराय। सबहि

मनाये कोउ न होत सहाय । २०० । स्याम मिलनकी धरिधरि जिय महँ आस । करत सदा हम सजनी जप उपवास । २०१ । हम उनलागि परनवां अरपन कीन । सो अस निठुर पियरवा सुधिहु न लीन । २०२ । लिषि न पठाई पतियौ येकौ मीत । का राषिहि निरदैया सांची प्रीत । २०३ । सजनी नेह निबाहब सहज न होय । प्रीति रहै बरु जियरा जावै षोय । २०४ सषी इकंगी नेहवा दुष बहु आहि । दियनां मांहि पतंगवाकर जिय जाहि । २०५ । करिकरि स्याम सुरतिया हम दिन रैन । रोइरोइ मन मारहिँ छिनहुं न चैन । २०६ । सजनी कास सुधि होइहि उनै हमारि । राजकुंवर वे हमहैं सकल गमारि । २०७ । कोऊ कहैं सषीरी मुहि दिन रैन । झझक उठै हिय धरकत परै न चैन । २०८ । कोऊ षबरि सुनाइहि असि फिरि हाय । आये मीत पियरवा देषहु जाय । २०९ । रहै जहां मोहन तंह जाय न जाय । सजनी सो बट छंहियां धरि धरि खाय ।२१०। लगत मसान भवनवां परिजन भूत । रिपु समान दरसावैं पितु पति पूत।२११। जबसे स्याम सजनवां बिछुरे हाय । तबसे अपनि देहियां मुहि न सुहाय । २१२। बिछुरत प्रीतम छतिया फाटि न मोरि । अब छिन छिनहि कढ़ै

जवा उठत मरोरि । २१३ । बूड़ि मरै बरु हेली समुद मझार । बिरह कलेस न डारै काहु कतार । २१४ । लाय भसम वरु देहियां बसै पहार । प्रीतमकै बिछुरनियां होय न पार।२१५। दुष चाहै सो बिधिना दे भरपूर । पै अंखियनिते मितवहि करै न दूर । २१६ । प्रीतम साथ सहेली बनहु सुहाय । उन बिन सून सदनवा बिपिनि लषाय । २१७ । बोली येक सुनैरी सपनो मोर । लषि आज जनु आये राजकिशोर। २१८ । बोली इक कुअला पर बैठा काग । काहु सांची यह दैहौं तुहि बलि भाग । २१९ । काग कनकके पिंजरा राषौं तोहि । जुपै सगुन यह सांचो तेरो होहि । २२० । जस हमारहै जियरा उनसंह लाग । तस मितऊकार ह्वैहै काहुरे काग । २२१ । कोउ कहै सषि बूझिय गनक बुलाय । किते दिवस महँ ऐहैं अब रघुराय ।२२२। वाम नैंन द्वै दिनसें फरकत मोर । आय काग शुभ बोलिया बोलत भोर।२२३। सखिरी नीक सगुनवा अबनित होहि । जानियरै अस मिलिहै प्रीतम मोहि । २२४ । इहि बिधि इत नित निसि दिन सुमिरहिँ स्याम । अवधि आस मग निरषैं सबही बाम।२२५। इत रघुनंदन सीता लषन समेत । चले जात मग सबही अति सुख देत । २२६ । व० का० ॥

देकै मग कानन निवासिन्ह अनंद सबै चित्रकू-
ट वसिकै चरित्र बहु कीनेहैं। भरतहितोषि परि
तोषि रिषि वृंद घने बहुरि सिधारे सिय बंधु संग
लीनेहैं। रसिक बिहारी सुख देत धनु धारी घ-
नो जग हित कारी बर दंपति प्रबीनेहैं। गो-
दावरि तीर कियो बास रघुबीर धीर सकल मु-
नीसनकों अभै करिदीनेहैं। २२७। सीता बं-
धु संजुत बसेहैं राम पंचवटी गोदावरि तीर जो
पुनीत शुभ्र थलहै। सूपनखा आई ब्याह हेतु सो
कुरूप कीनी मारि खरदूषनादि दुष्टनको दलहैं। र-
सिकबिहारी लषि कनक कुरंग संग धाये रघुबीर
काहू जानो नाहिँ छलहै। हरी दससीस सीता
पाछे रघुराय आये आश्रम बिलोकि सूनो चोज-
त बिकलहैं। २२८। जनक सुताकों हरिली-
नी दससीस जबै रथपै चढ़ाय लेचलोहै निज
भौंनकों। बिकल अधीर बिललाति कुररीकी भां-
ति दीनह्वै पुकारतिहैं भूमि रबि पौंनकों। र-
सिक बिहारी हाय प्रीतम धनुषधारी आपनी
दशा या मैं सुनाऊँ सबै कौंनकों। अबतो परीहै बा-
लमृगी या बधिक हाथ बेगही छुटावो धावो
दुष्टदल दौंनकों। २२९। हाय रघुचंद हायदसरथनं-
दप्यारे हाय रघुबीर धीर पीरकेहरैयर हाय। हा-
य प्राणवल्लभ दयाल रघुलाल हाय संकट हरैयर
उर आनद भरैया हाय। हाय सुषकारी हाय

रसिक बिहारी धाय कीजिये सहाय आय धनुष धरैया हाय । हाय प्राण प्रीतम सुजान बलवान ऐसी सुरति बिसारी क्यौं हमारी रघुरैया हाय । २३० । विकल बिदेही दीन अति बिललात जात सो सुनि जटायू बल कीनो कछु धायकै । ताकों मारि रावन परानों सिय संग लैकै लंकमें ससंक गयो अति अकुलायकै । सीताकों असोक वाटिकामें लै दुराई जाय त्रिजटादि दासी ढिग राषीं समुझायकै । जनक कुमारी बहु बिरह दुखारी भई रटत सदाहीं स्याम नाम हाय हायकै । २३१ । बिरह विहाल सीस नाय सिय सोचतहैं मोचत हगन वारि ऊँची स्वास भरिकै । रसिक बिहारी को मिलावै धनु धारी अब भूमिहूं न मेरे हेतु फाटत दररिकै । स्यामरघुराई कहा चूक बनिआई मोतें ताहीसों दुराई चुप ह्वै रहे बिसरिकै । हाय प्रानप्यारेका दरस मोहि दुर्लभ भो बिसुख मरौंगी या बियोग ज्वाल जरिकै । २३२ । निपट निलज्ज सदा सहत बियोग पीर रटत हमेश हाय भयोहै संतापी तू । येरे मति हीन दीन दुषित घनेरो वृथा विलपत रैनि दिन रहत विलापी तू । रसिक विहारी प्रान प्यारे ढिग जारे अब बिरह सुनारे कस होत मृषालापी तू । ऐसहू कलेश धृग जीवनहै तेरो हाय

निकसंत नाहीं क्यौं कठोर प्रान पापी तू ।२३३।
जैसी प्रानप्यारेके बिरह सिय ब्याकुलहैं तैसे र-
घुराय इतै बिलपत दीनहैं । प्यारीके बियोग
ह्वै बिहाल चहुं हेरतहैं डोलत बिकल बैन बो-
लत अधीनहैं । तन मन प्रान सुधिसकल भु-
लाय गई तलफत लाल जैसे नीरबिन मीनहैं।
रसिक बिहारी हाय सीतै रट लागिरही दोऊ
बंधु षोजैं बन बदन मलीनहैं । २३४ । षोजत
पियारी चले बिरह दुषारी राम रैनि उजिया-
री मांहि बंधु बांह गहिकै । सुधि बुधि भूली
रघुराय अकुलाय बोले बिलमौ घरीकं तातं तरु
छांह लहिकै । आतप सहा न जात लषन क-
ही हो नाथ रसिक बिहारी रही चंद्रिका उल-
हिकै । सुनिकै मृगंक नाम झझकि उठेहैं राम
हाय मृगनैनी हाय चंद्रमुखी कहिकै । २३५ ।
हाय मृगनैनी हाय प्यारी सुषदैनी हाय प्रिया
बरबैनी बिन तोहि कित जाऊँ मैं । हायहाय जा-
नकी सु हाय प्रान प्रानकी जु हाय गति प्रान-
की या किहिकों सुनाऊँ मैं । रसिक बिहारी
हाय सुरति बिसारी प्यारी छिनछिन भारी कै-
से दिवस बिताऊं मैं । हाय प्रानवल्लभा किशो-
री क्यौं दुराय रही नेंक मिल आय धाय अंकु-
सों लगाऊँ मैं । ।२३६ । मो बिन सु जाकी होय
छिनहू न होती कल सो क्यौं निठुराई करि

मनकों जिते गई । रूप गुन वारी हाय जनक दुलारी प्यारी नेंक कृपा कोर मेरी श्रोर न चिते गई । श्रम स्रग रसिक बिहारी हौं दुषारी मोकों वा ढिग पठावो प्रिया भामिनी तिते गई । दीन अविलोकि मोहि कोऊतौ बतावो आय हाय वह मेरी प्रानबल्लभा किते गई । २३७ । जनक दुलारी हाय रूप उजियारी प्रिया त्यागी क्यौं दयारी तू सनेह व्रत धारीहै । धाय मिल आरी टुक वदन दिषारी हौं तौ तो बिन दुषारी लागी बिरह कटारीहै । करिकै कृपारी हेर रसिक बिहारी बेगि मोपै यह पीर अब जातै ना सम्हारीहै । नैननितें न्यारी छिन होततीन प्यारी हाय मेरी प्रान प्यारी असी सुरति बिसारीहै । २३८ । येहो भूमि भूधर मतंग म्रगराज म्रग मो दिसि निहारौतौ बियोगी दीन बागौंहौं । गोदावरि पंचबटी बिटप बिहंग बेलि मेरी दुष हरहु तिहारे पाय लागौं हौं । छत्री जाति जदपि न जाचिवो उचित मोको रसिक बिहारी या बिरह भीति भागौं हौं । हौंतौ रघुराज पै बिहाय सब लाज आज देहु मुहि कोऊ मैं प्रियाको दान मागौंहौं । २३९ । "अंग लागै अहिसो पषान सम प्रानलागै बंधसो बसन लागै असन अजीरसो । चंद लागै चंडसो अराति असी राति लागै जमसो जगत

लागै नीर बिषनीरसो । रसिक बिहारी प्रान-
प्यारी बिन मोकों हाय भये बिपरीति सबै क-
रत अधीरसो । पावकसो पावंस बसंत बरछी-
सो लगै फूल लागै सूलसो समीर लागै तीरसो
२४० । येरे मैंन नृपति अनीति तू न ऐसी क-
र तोहि निरमोही रंच दया ना शरमहै । तानै
बान मोपै कहा मैंतोहैं बियोगी दीन जारो
मम अंग बिरहागिनि परमहै । रसिक बिहारी
नैंक मो दिसि निहारी धीर धरिदे धनुष यह
निंदित करमहै । वैसही मरोहैं प्रानप्यारीके
बिछोह हैंतो मृतकहि मारिबो न बीरको ध-
रमहै । २४१ । सबैया कबित्त ॥ मंदरतैं दबि तू
न गयो अरु राहु न लील लयो बरियाई । मो-
हि बियोगी बिलोकि जरावत रे ससि तैंहूँ भ-
यो दुषदाई । मैं रसिकेस मयंक अबै तुहि कै
सत खंड जु देंहुँ गिराई । प्रानप्रिया मुखकी
अनुहारि निहारि तजैं तुहि चंद कसाई ।२४२।
घ० क० ॥ बिकल बियोगी दीन अबल बिलो-
कि मोते जेते जड़ चेतन ते सबै मुष फेरोहै ।
रोइ ह्वै अधीन कर जोरि मैं सुनाई बिनै दा-
या करि येको नैंक मो तन न हेरोहै । छिनमें
बिदारैं इन पापी अभिमानिनकों जानत न रोष
रघुबंसको करेरोहै । रसिक बिहारी प्रानप्यारी
ना बतावै कोउ आनते लषन धनु बान कित मे-

रोहैं । २४३ । लोक तिहुँ जारौं सातौ सागर सुषाय डारौं गिरिन्ह ढहाय डारौं भूमि उलटाऊँ मैं। रंचमें विदारि डारौं दसौ दिगपालनकौं खगन समेत ससि सूरहि गिराऊँ मैं। नभते पताल लैकै कितहू कहूँ जौ नैंक रसिक बिहारी प्रानप्यारी सुधि पाऊँ मैं । जानकी न लाऊं तोपै छत्री ना कहाऊँ राम नाम पलटाऊं धनु बान ना उठाऊं मैं ॥ २४४ ॥ सोरठा ॥ रघुबर रोष निहारि लषनकही कर जोररिकै । मिलिहैं राजकुमारि नाथ धीर उर धारियै । २४५ ।मिलिहैं यह सुनि स्याम विकल उठे अकुलायकै । कांहं भामिनी ललाम इत उत फिरि षोजन लगे । २४६ । घ० क० ॥ हेरत चहूंघां हाय सौंते कहि टेरतहैं रसिक बिहारी प्यारी मिल क्यौं दुरानीहै । विरह व्यथाते रघुराय हैं विकल जैसे काहूभांति तैसी गति जाय ना बषानीहै । उड़ि मग धूरि भूरि पूरि रही स्याम गात अधिक सुहात सो सुरीति दरसानीहै। हेरि निज नाथ तिय बिरह दुषारी मनौं भूमिअकुलाय धाय आयलपटानीहै।२४७। सो०॥या बिधि विरह बिहाल बिलपत हेरतफिरतहैं । तिय बिछुरनिकी ज्वाल बढ़ी न नैंक सिरीतहै । २४८ । हेरत हेरत स्याम बैठिगये मग बीचही । निज मनहींमन राम सोचतहैं चित

चकित ह्वै । २४९ । घ० क० ॥ आजलौं सुनी ना कहूं असी रघुबंस मांहिं रसिक बिहारी भई जैसी यह बातहै। ऐसा को जु हेरै रघुबंसिनकी बाम और गति भवितव्यते न काहूको बसातहै। इत महि सासुकी संकोच सकुचात अति कुल पति भानु उतै तिन्हहिँलंजातहैं । नीचा अरु ऊँचा मुष करत न राम याते सौंहें हग दीने बैठे मन अकुलातहैं ॥ २५० ॥ सो० एजूं राजकुमार लषन कह्यौ कर जोरिकै । आतप तपनि अपार इतते उठि तरु तर चलिय ।२५१ । भुजंग प्रयात छंद । सुनी बंधुकी बानि राजीवनैना । तबै दीन ह्वै लाल बोले सुबैना । जबैतें सिया प्रानप्यारी बिछोही । तबैतें सबै देतहैं ताप मोही।२५२।घ०क० बिरह भभूकैं तन लूकैंसी लगीहैं अति मनसिज हूकैं अंग अंगन छई रहैं । नीर औ समीर छांह चंद्र निसि चंद्रिकादि सीतल सकल वस्तु तपनि तई रहैं । रसिक बिहारी कित जाउँ हाय कासा कहौं दसौ दिसि देषौं तितै अनल मई रहैं । पावस सरद हिमि सिसिर बसंत मोहि प्यारी बिन सबै रितु ग्रीषम भई रहैं । २५३ । तोटक छंद ।। इमि दीन सुबैन जु बोलतहैं । बनिता बिरही बन डोलतहैं । जबहीं नव फूलनको निरषैं । तबहीं करि हाय हिये करषैं । २५४ । अबिलोकि र-

सालन मौरनकों । पुनि हेरि लता तरु औरन-कों । रघुलाल बिहाल जु होयरहे । अकुलाय मनोजहि बैन कहे । २५५ । घ० क० ॥ येरे पंचबान पांचौ बान भले मारे मोहि बीर तुव रोष यह अति उपकारी भो । सब दुष छूटो बि-रहानलकी ज्वालतें तो सरन्ह समेत मम अंग जरि छारी भो । अब बिन तीरके न ह्वै है बरि-आई तोपै मैंन तू निरायुधहू निपट दुषारीभो। कोउ भीति मानिहै न कहूं ना रंच तेरी सदा र-सिक बिहारी लोक सकल सुषारी भो । २५६। दो० १। यहि बिधि बनबन फिरत बंधु सहित रघुराय । जनकसुता हेरत चहूं इतउत षोज लगाय । २५७ । गीध सेवरिहि मिलि चले म-ग मुनिजन दरसाय । तिन सबही सनमानिकै सिय सुधि पूछत जाय । २५८ । मिले पवनसु-त रामसों दिय सुग्रीव मिलाय । रघुबर बालि-हि मारिकै कियो सुकंठहि राय । २५९ । चहूं ओर सिय षोज हित कपि पठये सुग्रीव । सी-ता सुधि लाये तबै पवन तनय बल सीव।२६०। शिव थपि सागर बांधिकै कपि दल संजुत राम शरण बिभीषन राषिकै कियो अमित संग्राम २६१ । कुंभकरन घननाद जुत निसिचर कटक अपार । रघुनंदन दससीसकों मारो समर म-भार।२६२।करि बिभीषनै लंकपति जनक सु-

तहि लै राम। दलजुत पुष्पक जान चढ़ि आ-
यगये निज धाम। २६३। राम लषन सिय नि
रषिकै मुदित भये सब लोग। काहूत सकल अ-
व सिद्धि भो नेम धर्म जप जोग। २६४। गुरु-
वसिष्ठ दिन सोधिकै कियो तिलक सजि सा
ज। निरषि राम सियकी छटा प्रमुदित स-
कल समाज। २६५। शिव बिरंचि सनकादि
सब नारदादि सुरपाल। आय आय अस्तुति क
रत जैजै शब्द बिशाल। २६६। पुर परिजन
सेवक सषा रहत सकल सानंद। कृपा दृष्टि
राषत सदा सब पर सिय रघुचंद। २६७। छ-
प्पै छंद॥ अवधधाम मधि कनक भवन मंदिर
दंपतिको। सिय सिय पतिको सैन सदन हित
सुख संपतिको। रहे तहां षट श्री समेत अधि-
पति गुरु ख्याता। है जानकी प्रसाद शिष्य तिनको
लघु ष्याता। सो रसिक बिहारी नाम यह क-
छु धरत रसिकेस कारि। है बिरह दिवाकर ग्रं-
थ यह तिहि प्रगटो आनँद भरि। २६८। संब-
त ससि गुन अंक भूमि मधु मास निहारी।
शुक्ल पच्छ रबि बार द्वादसी तिथि निरधारी।
ता दिन पूरण कीन ग्रंथ यह बिरह दिवाकर।
अनुचित छमियो मोर सबै बुध सुकबि कृपा
कर। जो सिय रघुबर गुण ग्रामकी रसिक सु-
जान आनंन्यहैं। सो सुनि चरित्र हुलसायहैं

धन्यधन्य ते धन्यहैं।२६९।घ०क० सुजस घनेरो चहुं फेरो महि मंडलमें सुख बहुतेरो भलो दे त बसु जामहैं। हरत कलेश सबै तन मन प्रा नको जु रिद्धि सिद्धि पूरत हमेश सब ठामहैं। छावत प्रमोद सरसावत अपार बित्त सकल सु बुद्धि उपजावत ललामहैं। पवन कुमार अरु लषन समेत सदा रसिक बिहारीपै कृपाल सि- य रामहैं। २७०। इति श्री रसिक बिहारी कृ त बिरह दिवाकर समाप्तम्। १।

दसरथनंद दुखद दहर दीनानाथ दासरथी दा नी दीनपालक नमो नमो। जनककिशोरी जगदंबा जन भीतिहारी जय जस कारी जैति जानकी नमो नमो। रसिकबिहारी रामबंधु र- मनीयरूप रीति रस ग्याता राजसुवन नमो न- मो। बायुपुत्र बीर बेदबेता बर बिद्यावंत बि- पुलबलिष्ट बरदायक नमोनमो॥

स्वामिनि हे रघुनंदन भामिनि मोहि तिहारोहि है अवलंबा। और न काहुको मानतहों तिहुँ लो- कहैं देबी जु देव कदंबा। रावरोहौं रसिकेस सदा पुनि मोहित लावति काह बिलंबा। दी- न दुखी अपनो सुत दोषकै कीजिय बेगि कृपा अब अंबा।१।

शुभमस्तु मंगलंददातु। श्रीजयति। श्रीजयति।